

① विप्र ध्वज सुर संत हित लीन मनुज
अवतार, निज २ इच्छा विरहित मन

माया मुन गोपार
जार्-२-कर भाग कु हरस देन
② अर्ध रंग पद सरोज अनपथकी शक्ति
भक्ति संदा संत संग

③ अर्ध न धर्म न काम सचि कु द न
चोड़ विरवान जेम्स-२ रीत राम पद
मे चर दान अमान

④ सुत दास और लहरी पापी के भी
रोष संत सपगम सरे नक नुलनी
हुलिया दाम

⑤ रे मन भला न कर सलो डुरे पंथ
मत जाय अमृत फल स्वामी नही
विष फल को रचाय

⑥ कथा नहु दवि आप की भले सिंगो
नाथ तुलसी भरतन जब नव धनुष
बाण लियो हाथ

⑦ कित सुरली कित चन्द्रिका कित गोपिमन
के साथ अपने जन के कारण
श्री लक्ष्मी भैया रघुनाथ

सिमा बर राम जय जय भई प्रभु राम
अप जय राम राम

श्री-शमचन्द्र जी जय

श्री-राधा कृष्ण जी जय

उमापाति महादेव जी जय

पवन सुत हनुमान जी जय

सब सन्तन जी जय

सनीतनयन जी जय

गङ्गा माता जी जय

गङ्गा मर्या जी जय

सब तीर्थों जी जय

त्रिषु मुनि यों

पोगी जतीयों जी

लपशीया जी जय

सदा ही जय

श्री-शमचन्द्र जी जय

श्री-राधा कृष्ण जी जय

उमापाति महादेव जी जय

पवन सुत हनुमान जी जय

सब सन्तन जी जय

सनीतनयन जी जय

गङ्गा माता जी जय

गङ्गा मर्या जी जय

सब तीर्थों जी जय

त्रिषु मुनि यों

पोगी जतीयों जी

लपशीया जी जय

सदा ही जय

आरती जगजननी मैं तेरी गाऊं ।
तुम बिन कौन सुने वरदाती,
किस को जा कर विनय सुनाऊं ॥

असुरों ने देवों को सताया,
तुमने रूप धरा महामाया ।
उसी रूप का मैं दर्शन चाहूँ ॥

रक्तबीज मधुकैटब मारे,
अपने भक्तों में काज सँवारे ।
मैं भी तेरा दास कहाऊं ॥

आरती तेरी करूँ वरदाती,
हृदय का दीपक नेयनों की भाँति ।
निसदिन प्रेम की ज्योति जगाऊं ॥

ध्यानु भक्त तुमरा यश गाया,
जिस ध्याया, माता फल पाया ।
मैं भी दर तेरे सीस झुकाऊं ॥

आरती तेरी जो कोई गावे,
चमन सभी सुख सम्पत्ति पावे ।
मैया चरण कमल राज चाहूँ ॥



श्रीरामावतार

भए प्रगट कृपाला दीनदयालया कौसलया हितकारी ।
 हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी ॥
 लोचन अभिरामा तनु चनस्यामा निब आपुध भुज चारी ।
 भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ॥
 कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी कोहि बिधि करी अनंता ।
 माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ॥
 करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहिं नुति संता ।
 सो मम हित लागी जन अनुगामी भयउ प्रकट शोकंता ॥
 ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।
 मम ठर सो वासी यह उपहासी सुनत धीर मति धिर न रहै ।
 उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कोन्ह चहै ।
 कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥
 माता पुनि बोली सो मति टोली तजहु तात यह रूप ।
 कोनै सिसुलीला अति प्रियसारा यह सुख परम अनुपा ॥
 रति बचन मुजाना रोदन काल होइ कलक सूरभूषा ।
 यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न रहि भवकृपा ॥



AARTI

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।

Om Jai Jagdish Hare, swami Jai Jagdish Hare

Glory to the Creator of the world :

भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे ॥ ओम् ॥

Bhakt jano ke sankat, kshana mein door kare

Who quickly removes the difficulties of the devotees :

1. जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का ।

Jo dhyave phal pave, dukh vinshe man ka.

He who prays gets the fruit : troubles of the mind are set at peace :

सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का ॥ ओम् ॥

Sukh sampati ghar aave, kashta milte tan ka

Peace and prosperity come home, bodily pains disappear :

2. माता पिता तुम मेरे शरण गहुं किसकी ।

Mat pita tum mere, sharan gahun mein kiski

You are my parents, where else shall I seek the shelter :

तुम बिन और न दुआ आस करुं जिसकी ॥ ओम् ॥

Tum bin aur na dooja, aas karun mein jiski

Without you there is no one else I can rely upon :

3.

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।

Tum pooran Paramatma, tum antaryami

You are Supreme Soul omnipresent, and omnipotent

पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ ३८ ॥

Paar Brahm Parmeshwar, tum sab ke swami

You are the Supreme Lord : you are everyone's Master.

4.

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।

Tum karuna ke saagar, tum palan karta

You are extremely merciful. You are the protector.

मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ॥ ३९ ॥

Main sewak tum swami, kripa karo bharta

I am your servant, you are my Lord : Have mercy on me :

5.

तुम ही एक अगोचर, सब के प्राण पति ।

Tum ho ek agochar, sab ke pran pati

You are the one invisible, you are the master of all souls.

किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती ॥ ४० ॥

Kis vidh miloon dayamay tumko mein kumati

How could I meet you o'compassionate one, I being so ignorant :

6.

दीन बन्धु दुःख हर्ता तुम रक्षक मेरे ।

Deen bandhu dukh harta tum rakshak mere

O'friend of the poor, remover of all sorrows, O'my protector :

करुणा हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॥ ४१ ॥

Karuna hath uthao, dwar para tere

Raise your merciful hands, I am at your doorstep.

7.

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।

Vishaya vikar mitao, paap haro deva

Remove all my worldly passions and desires. Free me from sin.

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तान की सेवा ॥ ४२ ॥

Shraddha bhakti barhao, Santan ki seva

Enhance faith and devotion in me and
in the spirit of service for the saintly beings.

तन मन धन सब कुछ है तेरा "प्रभु"
ता सुखो जोग, का नहिं तेरा न शोक न

Tan man dhan sab kuch hai tera "Prabhu"
Tere tukho apni, kya lage mere

Of God, the body, the mind and the wealth - all belongs to you and
I offer you all that back because nothing belongs to me.

सुख सु-दुःख जो भी जगति जो भी तेरा नहिं
सुख निरासद नहिं नहिं नहिं नहिं नहिं नहिं

Suukh Sundari hi nahi, Jo hai jan gane
Kahi shivand shanti, man vachit phal pava

The blessed indicates that one who worships the Supreme Lord regularly
gets all one's wishes fulfilled.